

## वक्तव्य.



हालमें “ जैन जाति महोदय ” नामक ऐतिहासिक पुस्तक छपवाई जा रही है जिसके २५ प्रकरणों के अंदरमें यह तीसरा प्रकरण आपके करकमलोंमें उपस्थित है । इस प्रकरण के अंदर जैन महाजन मंच और उनकी शाखाएँ ओगवाल-पोरवाट और श्रीमाल जानियोंका प्राचीन और प्रमाणिक इतिहास बड़ी ही शोधपूर्णताके साथ सज्ज किया गया है । साधारण जनताके विशेष लाभार्थ इस प्रकरणकी १००० कोपी अलग बंधवाई गई है । अपनी जानिकी महत्त्वना और प्राचीनता जानने के लिए प्रत्येक जैन भाईयों को एक कोपी अपने पास अवश्य रखना चाहिए.

अगर कोई मजन अपने भाईयों को प्रभावना देनी चाहे वह ऐसी ऐतिहासिक किताबों की प्रभावना दे कि जिनमें अपने पूर्वजोंका गाँव, आचार, विचार, आपस का प्रेम, मेक्यता, संगठनादि उच्च आदर्श का समाज में संचार हो सकें.

यस संशोधन आदि कारणोंसे स्थूलता रह गई हो तो पाठकसंग हम करें. इति ।

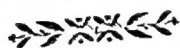
प्रकाशक.

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला पुष्प न. ८६

श्री रत्नप्रभसूरीश्वरपादपद्मेभ्यो नमः

अथ श्री

जैन जाति महोदय.



तीसरा प्रकरण.

नत्वा इन्द्र नरेन्द्र फणीन्द्र, पूजित पाद सदा सुखदाई ।  
कैवल्यज्ञान दर्शन गुणधारक, तीर्थकर जग जोति तगाई ॥  
करुणावंत कृपाके सागर, नलता नागको दीया बचाई ।  
वामानन्दन पार्श्वजिनेश्वर, वन्दत 'ज्ञान' सदा चितलाई

( २ )

पालित पञ्चाचार अखण्डित, नौविध व्रतके धारी ।  
करी निकन्दन चार कषायको, कछजे कर पंच इन्द्रियप्यारी ॥  
पञ्च मदाव्रत मेरु समाधर, सुमति पंच बडे उपकारी ।  
गुप्ति तीन गोपि जिस गुरुको, प्रतिदिन वन्दित 'ज्ञान' आभारी

( ३ )

संस्कृत दिव घाणि प्राकृत, रची पट्टाबलि पूर्वधारी ।  
तांको यह भाषान्तर हिन्दी, बाल लीखोको है सुखकारी ॥  
सरल भाषाको चाहत दुनियो, परिश्रम मेरा है । दत्तकारी ।  
ओसवंस उपदेश गच्छते, प्रगट्यो पुण्य 'ज्ञान' नयकारी ॥

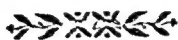


श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला पुष्प न. ८६

श्री रत्नप्रभासुरीश्वरपादपद्मेभ्यो नमः

अथ श्री

जैन जाति महोदय.



तीसरा प्रकरण.



नत्वा इन्द्र नरेन्द्र फणीन्द्र, पूजित पाद सदा सुखदाई ।  
कैवल्यज्ञान दर्शन गुणधारक, तीर्थंकर जग जोति नगाई ॥  
करुणाध्वंत कृपाके सागर, नलता नागको दीया बचाई ।  
वामानंदन पार्श्वजिनेश्वर, बन्दत 'ज्ञान' सदा चितलाई

( २ )

पालित पञ्चाचार अखण्डित, नौविध ब्रह्मव्रतके धारी ।  
करी निकन्दन चार कपायको, कब्जे कर पंच इन्द्रियप्यारी ॥  
पञ्च महाव्रत मेरु समाधर, सुमति पंच बडे उपकारी ।  
गुप्ति तीन गोपि जिस गुरुको, प्रतिदिन बन्दित 'ज्ञान' आभारी ॥

( ३ )

संस्कृत दिव वाणि प्राकृत, रची पट्टावलि पूर्वधारी ।  
तांको यह भाषान्तर हिन्दी, बाल लीखोको है सुखकारी ॥  
सरल भाषाको चाहत दुनियो, परिभ्रम मेरा है दृढचारी ।  
ओसबंस उपदेश गच्छते, प्रगट्यो पुण्य 'ज्ञान' नयकारी ॥



आपत्री के पवित्र जीवन के विषय में किसी पट्टावलिकारने विशेष वर्णन न करते हुए यह ही लिखा है कि आप अपनी अन्तिमवस्था में शासन का भार आचार्य हरिदत्त सूरि के सिर पर रख आपत्री सिद्धाचलजी तीर्थपर एक मास का अनसन पूर्वक चरम श्वासोश्वास और नाशमान शरीर का त्याग कर अनंत सुखमय मोक्ष मन्दिरमें पधार गये इति पार्ष्वनाथ प्रभुके प्रथम पट पर हुवे आचार्य शुभदत्तसूरि ।

( २ ) आचार्य शुभदत्त सूरि मोक्ष पधार जाने पर सूर्य और चन्द्र इन दोनों का प्रकाश अस्त हो जानेसे श्री संघमें बहुत रज हुआ तत्पश्चात् आचार्य हरिदत्तसूरि को संघ नायक नियुक्त कर सकल संघ उन सूरिजी की आज्ञा को तिरोद्धारण करते हुवे आत्म कल्याण करने में तत्पर हुवे आचार्य श्री श्रुत समुद्र के पारगामी, वचन लब्धि, देशनामृत तूल्य, उपशान्त जीतेन्द्रिय यशस्वी परोपकार परायणादि अनेक गुण संयुक्त सूर्य चन्द्र के अभाव दीपक की परे उपोत करते हुवे भूमण्डल में विहार करने लगे । दूमरी तरफ यज्ञहोम करनेवालों का भी पग पसारा विशेष रूप में होने लगा हजारो लाखो निरापराधी पशुओं का बलीदान से स्वर्ग चतलानेवालों की सख्या में वृद्धि होने लगी परिम्राजक प्रव्रजित सन्यासी लोगोंने इसके विरुद्ध में खडे हो यज्ञ में हजारो लाखों पशुओं का बलिदान करना धर्म विरुद्ध निष्ठूर कर्म बतला रहे थे आचार्य हरिदत्तसूरि के भी हजारो मुनि भूमण्डल पर अहिंसापरमो धर्म का झंडा फरका रहे थे एक समय विहार करते हुवे आचार्य श्री अपने ५०० मुनियों के परिवार से स्वस्तिनगरी के उद्यान में पधारे बड़ा का राजा अदीनशु नागरिक बडे ही आडम्बरसे सूरिजी को वन्दन करने



मान् श्रूषभदेव व नेमिनाथ पार्श्वनाथ के नामोंका उल्लेख है (देखो वेदोंकी श्रुतियों पहला प्रकरण में) वेदान्तियोंने भी जैनतीर्थ-  
 कोंको नमस्कार किया है राजा भरत-सागर दशरथ रामचंद्र  
 श्रीकृष्ण कौरवपाण्डु यद्य सब महा पुरुष जैन ही थे जैन  
 लोग ईश्वरको नहीं मानते यद्य कदना भी मिथ्या है जैसे  
 ईश्वरका उच्चपद और श्रेष्ठता जेनोंने मानी है वसी किसीने  
 भी नहीं मानी है। अन्य लोगोंमें कितनेक तो ईश्वर को  
 जगत्का कर्त्ता मान ईश्वरपर अज्ञानता निर्दयताका कलंक  
 लगाया है कितनेकोंने सृष्टिको संसार और कितनेकोंने पुत्री-  
 गमनादिके कलंक लगाया है जैन ईश्वरको कर्त्ता दत्ता नहीं  
 मानते हैं पर सर्वज्ञ शुद्धात्मा अनंतज्ञान दर्शनमय मानते हैं  
 निरञ्जन निराकार निर्घिकार ज्योती स्वरूप सकल कर्म रहित  
 ईश्वर पुनः पुनः अवतार धारण न करे इत्यादि घादविवाद  
 प्रश्नोंत्तर होता रहा अन्तमें लोदिताचार्य को सद्ज्ञान प्राप्त  
 होनेसे अपने १००० साधुओं के साथ आप आचार्य हरिदत्त-  
 सूरि के पास जन दीक्षा धारण करली इसके साथ सेकड़ों  
 दत्तारों लोग जो पदलेसे यत्कर्मसे त्रासित हुये सूरिजीका  
 सद्ज्ञानसे प्रतिबोध पाके जैनधर्मको स्वीकार कर लीया।  
 क्रमशः लोदितादि मुनि आचार्य हरिदत्तसूरि के चरणकमलों  
 में रहते हुये जैन सिद्धान्त के पारगामी हो गये तत्पश्चात्  
 लोदित मुनिको गणिपदसे विभूषित कर १००० मुनियोंको  
 साथ दे दक्षिण की तरफ बिहार करवा दीया, कारण  
 यहां भी पशुश्रमका बहुत प्रचार था आपसी अहिंसा परमो  
 धर्मका प्रचार में बड़े ही विद्वान और समर्थ भी थे आचार्य  
 हरिदत्तसूरि चिरकाल पृथ्वीमण्डल पर बिहार वर अनेक  
 आत्माओं का उत्सार भीया आपसी अपना अग्निसंस्था



समय नजदीक ज्ञान अपने पदपर आर्य समुद्रसूरिको  
कर आप २१ दिनका अनशन पूर्वक वैभारगिरके उपर  
माशमान शरीरका त्याग कर स्वर्ग विधारे। इति दू १

३ आचार्य हरिदत्तसूरिके पट आर्य समुद्रसूरि  
प्रभाविक विद्याओं और श्रुतज्ञानके समुद्रही थे आपके शासन  
कालमें भी यज्ञयादियोंका प्रचार था हजारों लोगों ने  
पशुओंके कोमल कण्ठपर निर्दय देव्य डूंग चढानेमें और धर्मका  
नामसे मांस मदिराकी आचरणामें ही दुनियोंको जालमें फसा  
रहे थे आचार्यश्री के विशाल मर्यामें मुनि समुदाय पूर्व बंगाल  
छटीमा पञ्जाब मुल्तानादि जिन २ देशमें विहार करते थे  
उन २ देशमें अहिंसाका खुब प्रचार कर रहे थे अधर लोहित-  
गणि दक्षिण करणाट तटग महाराष्ट्रियादि देशोंमें विहार  
कर अनेक राजा महाराजाओं कि राजसभामें उन पशुहिंसकों  
का पराजय कर जैनधर्मका शडा करका रहेये आपके उपासक  
मुनिगणकि संख्या का.वन् २,००० तक हा गई थी दक्षिणमें  
अन्योन्य मतके आचार्यों का देश दक्षिण जनसंघ लोहित  
गणिकों इसपद के योग्य समस्त आचार्य आर्यसमुद्रसूरि दि  
सम्पत्ति मगयाके अछला दिन श्रुत मूर्तों में लोहितगणि के  
आचार्य पंडितें मृपित किये जिसमें दक्षिण विहारों मुनि  
योद्धी लोहित माया और उत्तर भारतमें विहार करनेवाले  
मुनियोंकी निर्ग्रन्थ समुदाय के नामसे ओरगाने लगी दोनों  
समुदायोंने हाथों धर्मदंड लेकर उत्तरमें दक्षिणतक  
जैनधर्मका इस कदर प्रचार कर दिया कि वेदाभितर्किका मूर्ख  
अज्ञाचर पर चढेजानेमें नाममात्र के रह गये थे.

आर्यसमुद्रसूरि का एक विदेशी नामका महा प्रभाविक

अतिशय ज्ञानेन्द्र मुनि ५०० मुनियों के साथ विहार करता अवन्ति ( उज्जैन ) नगरी के उद्यानमें पधारे वहांका राजा जयसेन था अनंगसुन्दरी राणि तथा उसका करोबन् १० वर्षका पुत्र केशीकुमारादि और नागरिक मुनिश्रीको घन्दन करनेको आये. मुनिजीने संसार तारक दुःखनिवारक और परम वैराग्यमय देशना दी देशना श्रवणकर यथाशक्ति व्रत नियम कर परिषदा मुनिको घन्दन कर विसर्जन हुई पर राजकुमर केशीकुमर पुनः पुन मुनिश्री के सन्मुख देखता वहांही बैठा रहा फिर प्रश्न किया कि हे करुणासिन्धु ! मैं जैसे जैसे आपके लामने देखता हूँ वैसे वैसे मेरेको अत्यन्त हर्ष-रोमांचित हो रहा है वैसे पूर्वमें कवी किसी कार्य में न हुवा था इतना ही नहीं पर आप पर मेरा इतना धर्म प्रेम हो गया है कि जिसको मैं जवानसे कहनेमें भी असमर्थ हू ।

मुनिश्रीने अपना दिव्यज्ञान द्वारा कुमर का पूर्व भव देखके कहा कि हे राजकुमर । तुमने पूर्वभवमें इस जिनेन्द्र दीक्षा का पालन किया है वास्ते तुमको मुनिवेष पर राग हो रहा है । कुमरने कहा क्या भगवान् ! सचही मेरा जीवने पूर्वभव में जैन दीक्षा का सेवन किया है ? इसपर मुनिने कहा कि हे राजकुमर । सुन इस भारत वर्ष के धनपुर नगरका पृथ्वीधर राजा की सौभाग्यदेविके सात पुत्रियों पर देवदत्त नामका कुमार हुआ था वह बाल्यावस्थामें ही गुणभूषणाचार्य पास दीक्षा ले चिरकाल दीक्षापाल अन्तमें सामाधिपूर्वक काल-कर पंचवा व्रतस्वर्गमें देव हुआ वहांसे बच कर तुं राजा का पुत्र केशी कुमार हुआ है यह सुन कुमर को उदापोद करती ही आतिस्मरण ज्ञानोत्पन्न हुआ जिससे मुनिने कहा था वह आप प्रत्यक्ष ज्ञान के जरिये सब आदेहुय देखने लग गया वस फिर



के बाद विवाहमें आत्मशक्तियोंका दुरुपयोग होने लगा. यज्ञ  
कर्म और पशु हिंसकों का फिर जोर बढने लगा धार्मिक  
और सामाजिक श्रृंखलनायें भी परावर्तन होने जगा.

यह सब हाल उत्तर भरतमें रहे हुवे केशीश्रमणाचार्यने  
सुना तब दक्षिण भरतमें विहारकरनेवाले मुनियोंको अपने  
पास बुलवा लिया अथपि कितनेक मुनि रह भी गये थे.  
दक्षिणविहारी मुनि उत्तरमें आने पर कुच्छ अरसा के बाद  
वहां भी यह ही हालत हुई कि जो दक्षिणमें थे। इधर आचा-  
र्यश्री घर की बिगड़ी सुधारने में लग रहे थे उधर पशुहिंसक  
यज्ञवादीयोंने अपना जोर को बढानेमें प्रयत्नशील बन यज्ञका  
प्रचार करने लगे. घरकी फूटका यह परिणाम हुआ कि एक पिहित  
मुनिका शिष्य जिसका नाम बुद्धकीर्ति था उसने समुदायसे  
अपमानित हो जैन धर्मसे पतित हो अपना बौद्ध नामसे  
बोद्ध'धर्म का प्रचार करना शुरु किया। बुद्ध कीर्तिने अपने  
धर्म के नियम ऐसे बिधे और सरल रखे कि हरेक साधा-  
रण मनुष्य भी उसे पाल सके बन्धन तो वह किसी प्रकारका

१ जैन श्वेताम्बर आम्नाय के आचाराग सूत्र कि टीकामें बुद्ध धर्म का  
प्रवर्तक मुल पुरुष बुद्धकीर्ति पार्श्वनाथ तीर्थ में एक साधु था जिसने बौद्ध धर्म चलाया.

२ दिगम्बर आम्नायका दर्शनमार नामका ग्रन्थमें लिखा है कि पार्श्वनाथ के  
तीर्थ में पिहित मुनिका शिष्य बुद्धकीर्ति साधु जैन धर्म से पतित हो मांस मट्टि  
आचारण करता हुआ अपना नामसे बौद्ध धर्म चलाया है

३ बौद्ध ग्रन्थोंमें लिखा है कि बुद्ध एक राजा शुद्धोदोत का पुत्र था वह  
तापसों के पास दीक्षा लीधी बोधि होनेके बाद अहिंसा धर्म का खुब प्रचार  
कीया ॥ इसका समय भगवान् महावीर के समकालिन माना जाता है कुच्छ भी  
हो. बुद्धने जैनसे अहिंसा धर्म की शिक्षा जरूर पाई थी



बादविषादमें आत्मशक्तियोंका दुरुपयोग होने लगा. यज्ञ और पशु हिंसकों का फिर जोर बढ़ने लगा धार्मिक और सामाजिक श्रृंखलनायें भी परावर्तन होने जगा.

यद्यपि सब हाल उत्तर भरतमें रहे हुवे केशीश्रमणाचार्यने तब दक्षिण भरतमें विहारकरनेवाले मुनियोंको अपने स बुलवा लिया अथपि कितनेक मुनि रह भी गये थे. दक्षिणविहारी मुनि उत्तरमें आने पर कुच्छ अरसा के बाह्य झां भी बह हो दालत हुई कि जो दक्षिणमे थी। इधर भावा-श्री घर की धिगड़ी सुधारने में लग रहे थे उधर पशुहिंसक जवादीयोंने अपना जोर को बढ़ानेमे प्रयत्नशील बन यज्ञका चार करने लगें. घरकी फूटका यह परिणाम हुआ कि एक पिहित मुनिका शिष्य जिसका नाम बुद्धकीर्ति था उसने समुदायसे सम्मानित हो जैन धर्मसे पतित हो अपना बौद्ध नामसे बुद्ध धर्म का प्रचार करना शरु किया। बुद्ध कीर्तिने अपने धर्म के नियम ऐसे मिथे और सरल रखे कि हरेक साधारण मनुष्य भी उसे पाल सके बन्धन तो वह किसी प्रकारका

१ जैन श्वेताम्बर आम्नाय के आचाराग सूत्र कि टीकामे बुद्ध धर्म का वर्तक मुल पुरुष बुद्धकीर्ति पार्श्वनाथ तीर्थ में एक साधु था जिसने बौद्ध धर्म चलाया.

२ दिगम्बर आम्नायका दर्शनमार नामका ग्रन्थमें लिखा है कि पार्श्वनाथ के तीर्थ मे पिहित मुनिका शिष्य बुद्धकीर्ति साधु जैन धर्म से पतित हो मास मट्टि आचारण करता हुवा अपना नामसे बौद्ध धर्म चलाया है

३ बौद्ध ग्रन्थोंमें लिखा है कि बुद्ध एक राजा शुद्धोदोत का पुत्र था वह पिता के पास दीक्षा ली थी बोधि होनेके बाद अहिंसा धर्म का खुब प्रचार किया था इसका समय भगवान् महावीर के समकालिन माना जाता है कुच्छ भी बुद्धने जैनोसे अहिंसा धर्म की शिक्षा जरूर पाई थी



के बावविषादमें आत्मशक्तियोंका दुरुपयोग होने लगा. यज्ञ कर्म और पशु हिंसकों का फिर जोर बढ़ने लगा धार्मिक और सामाजिक श्रृंखलनायेंमें भी परावर्तन होने लगा.

यद्य सब हाल उत्तर भरतमें रहे हुवे केशीश्रमणाचार्यने सुना तब दक्षिण भरतमें विहारकरनेवाले मुनियोंको अपने पास बुलवा लिया अथपि कितनेक मुनि रह भी गये थे. दक्षिणविहारी मुनि उत्तरमें आने पर कुच्छ अरसा के बाढ़ वहां भी यह दी ढालत हुई कि जो दक्षिणमें थी। इधर आचार्यश्री घर की बिगड़ी सुधारने में लग रहे थे उधर पशुहिंसक यज्ञवादीयोंने अपना जोर को बढ़ानेमें प्रयत्नशील बन यज्ञका प्रचार करने लगे. घरकी फूटका यह परिणाम हुआ कि एकपिहित मुनिका शिष्य जिसका नाम बुद्धकीर्ति था उसने समुदायसे अपमानित हो जैन धर्मसे पतित हो अपना बौद्ध नामसे बौद्ध धर्म का प्रचार करना शरु किया। बुद्ध कीर्तिने अपने धर्म के नियम ऐसे निधे और सरल रखे कि हरेक साधारण मनुष्य भी उसे पाल सके बन्धन तो वह किसी प्रकारका

१ जैन श्रैताम्बर आम्नाय के आचाराग सूत्र कि टीकामें बुद्ध धर्म का प्रवर्तक मुल पुरुष बुद्धकीर्ति पार्श्वनाथ तीर्थ में एक साधु था जिसने बौद्ध धर्म चलाया.

२ दिगम्बर आम्नायका दर्शनसार नामका ग्रन्थमें लिखा है कि पार्श्वनाथ के तीर्थ में पिहित मुनिना शिष्य बुद्धकीर्ति साधु जैन धर्म से पतित हो मात्त मदि स्नानारण करता हुआ अपना नामसे बौद्ध धर्म चलाया है

३ बौद्ध ग्रन्थोंमें लिखा है कि बुद्ध एक राजा शुद्धोदय का पुत्र था वह तापसों के पास दीक्षा लीधी बोधि होनेके बाद अहिंस धर्म का एक प्रकार कीरा ग इसका समय भगवान् महावीर के मगधदिन मना जाता है बुद्ध की हो. बुद्धने जेनोंसे अहिंसा धर्म की निष्ठा कर ५६ की





मुनियोका विहार करवा के आप एक हजार मुनियोंके साथ  
मागध देशमें विहार कर पशुबलि करनेवाले यज्ञ और  
मांसभक्षण करनेवाले बौद्धों के सामने खड़े हो गये

आपथ्री के परम पुरुषार्थ का यह फल हुवा कि राजा  
चेटक-सतानिक दधिषादन सिद्धार्थ-विजयसेन चन्द्रपाल  
अदिनशत्रु प्रसन्नजीत और राजा प्रदेशी आदि अनेक राजा  
महाराजाओं और लाखो मनुष्यों को पतित दशासे उद्धार  
कर पवित्र जैनधर्म के उपासक बना दीये थे.

आजकल इतिहास शोधखोल से पता मिलता है कि वह  
जमाना बड़ा हि विकट था आपुन के धर्म वाद के लिये  
स्थान स्थानपर मोरचा बन्धी हो रही थी । आत्मकल्याण  
करने कि जो आत्म शक्तियोंथी उनका दुरुपयोग वाद-विवाद  
में होता था अज्ञानताका का साम्राज्य था जनता मे बड़ा भारी  
कोलाहल मच रहा था इत्यादि कुदरत एक पता महा पुरुष  
की प्रतीक्षा कर रही थी कि जिसकी परमावश्यकता थी—

इसी समय में जगदुत्तारक श्रीलोकी नाथ शान्तिका  
समुद्र चरमतीर्थकर भगवान् महावीर प्रभुने अवतार धारण  
कीया संक्षिप्त में-क्षत्रीकुण्ड नगर का राजा सिद्धार्थ कि त्रिशलादे  
राणि की पवित्र रत्न कुक्षी में भगवान् महावीरने अवतार  
लीया । जन्म समय छप्पन दिगूकुमारीकाओंने सूतिका कर्म  
किया सौधर्मादि चौतठ इन्द्रोंने सुमेरुगिरिपर भगवान् का  
जन्म महोत्सव किया. भगवान् ३० वर्ष गृहयास में रहे एक  
पुत्री हुई वह जमालि क्षत्री कुमारको व्याही थी अन्तमें गृहा  
वस्थामें एक वर्ष तक वर्षादान दीया तत्पश्चात् इन्द्रनेरेन्द्रों के  
महोत्सवपूर्वक आपने दीक्षा धारण करी ६२॥ वर्ष घोर तप-



मुनियोका विहार करवा के आप एक हजार मुनियोंके साथ  
मागध देशमें विहार कर पशुबलि करनेवाले यज्ञ और  
मांसभक्षण करनेवाले बौद्धों के सामने खड़े हो गये

आपश्री के परम पुरुषार्थ का यह फल हुवा कि राजा  
चेटक-सतानिक दधिवाहन सिद्धार्थ-विजयसेन चन्द्रपाल  
अदिनशत्रु प्रसन्नजीत और राजा प्रदेशी आदि अनेक राजा  
महाराजाओं और लाखो मनुष्यों को पतित दशासे उद्धार  
कर पवित्र जैनधर्म के उपासक बना दीये थे.

आजकल इतिहास शोधखोल से पता मिलता है कि वह  
जमाना बड़ा ही विकट था आपुन के धर्म वाद के लिये  
स्थान स्थानपर मोरचा बन्धी हो रही थी। आत्मकल्याण  
करने कि जो आत्म शक्तियोंथी उनका दुरुपयोग वाद-विवाद  
में होता था अज्ञानताका का साम्राज्य था जनता मे बड़ा भारी  
कोलाहल मच रहा था इत्यादि कुदरत एक ऐसा महा पुरुष  
की प्रतीक्षा कर रही थी कि जिसकी परमावश्यकता थी—

इसी समय में जगदुद्धारक श्रीलोकी नाथ शान्तिका  
समुद्र चरमतीर्थकर भगवान महावीर प्रभुने अवतार धारण  
कीया संक्षिप्त में-क्षत्रीकुण्ड नगर का राजा सिद्धार्थ कि विशलादे  
राणि की पवित्र रत्न कुक्षी में भगवान् महावीरने अवतार  
लीया। जन्म समय एप्पन दिगूकुमारीकाओंने सूतिका कर्म  
किया सौधर्मादि चौमठ इन्द्रोंने सुमेरुगिरिपर भगवान का  
जन्म मद्योत्सव किया. भगवान् ३० वर्ष गृध्रास मे रहे एक  
पुत्री हुई यह लमालि क्षत्री कुमारको व्याही थी अन्तमें गृध्रा  
वस्थामें एक वर्ष तक वर्षादान दीया तत्पश्चात् इन्द्रनेदेन्द्रों के  
मद्योत्सवपूर्णक आपने दीक्षा धारण करी १२॥ वर्ष छोड तप-



उद्देशानुसार यहाँ महावीर भगवान् का सबन्ध यहीं समा  
कर आगे जैनज्ञाति के बारामे ही मेरा लेख प्रारम्भ करता हूँ

भगवान् केशीश्रमणाचार्यने जैनधर्म का अच्छी तरकी दी  
अन्तिमावस्थ में आप अपने पाट पर स्वयंप्रभ नामके मुनिकों  
स्थापनकर एक मासका अनशन पूर्वक सम्मेतशिखर गिरिपर  
स्वर्ग को प्रस्थान किया इति पार्व्वनाथ भगवान् का चतुर्थ  
पाट हुआ ।

( ५ ) केशीश्रमणाचार्य के पट्ट उदयाचल पर सूर्य के स-  
मान प्रकाश करनेवाले आचार्य स्वयंप्रभसूरि हुए आपका जन्म  
विद्याधर कुलमें हुआ था. आप अनेक विद्याओं के पारगामी थे  
स्वपरमत्त के शास्त्रों में निपुण थे आपके आज्ञावर्ति हजारों  
मुनि भूमण्डल पर विहार कर धर्म प्रचार के साथ जनताका  
उद्धार कर रहे थे इधर भगवान् वीरप्रभुकी सन्तान भी कम  
संख्यामें नहीं थी भगवान् महावीर का सँदेली उपदेशसे ब्राह्म-  
णोंका जोर और यज्ञकर्म प्रायः नष्ट हो गया था तथापि मरु  
स्थल जैसे रेतीले देशमें न तो जल पहुँच सके थे और न बौद्ध  
भी यदा आस के थे वास्ते यहाँ ब्राम्हणियों का बड़ा भारी  
तौरशौर था. यज्ञ होम और भी बड़े बड़े अत्याचार हो रहे थे  
धर्म के नामपर दुराचार व्यभिचार का भी पोषण हो रहा था  
कुण्डापन्थ का चलीयापथ यद ब्राम्हणियों की शाखाएँ थी  
देवीशक्ता के पट्ट उपासक थे इस देशके राजा प्रजा प्रायः सब  
इसी पन्थके उपासक थे उस समय मारवाट में भीमानगामह  
नगर उन ब्राम्हणियोंका केन्द्रस्थान माना जाता था.

आचार्य स्वयंप्रभसूरि के उपासक जैसे नेपर नूबर  
मनुष्य विद्याधर थे वैसे ही देवि देवता भी थे वह भी समय



विद्वान् शिष्यो को साथ ले सिधे हो राज सभामें गये जहां पर  
प्रज्ञ सम्बंधि सब तैयारीया और सलाहों हो रही और घड़े घड़े  
हटाधारी सिरपर त्रिपुंड्र भस्म लगाये हुवे गलेमें जीनौउके  
तागे पड़े हुवे मांस लुब्धक ब्राह्मणाभास बैठे थे आचार्यश्रीका  
अतिशय तप तेज इतना तो प्रभावशाली था कि सूरिजीका  
आते हुवे देखते ही राजा जयसेन आसनसे उठ खड़ा हुवा  
कुच्छ सामने आके नमस्कार किया सूरिजीने “ धर्म लाभ ”  
दीया उसपर वहां बैठे हुवे ब्राह्मण लोग हंसने लगे. राजाने  
पहिले कभी धर्मलाभ शब्द कानोंसे सुनाही नहीं था वास्ते  
सूरिजी से पूछा कि हे प्रभो ! यह धर्मलाभ क्या वस्तु है  
क्या आप आशीर्वाद नहीं देते हो जैसे हमारे गुरु ब्राह्मण  
लोग दीया करते हैं । इसपर सूरिजीने कहा:—

...

..

.

..

हे राजन् कितनेक लोग दीर्घायुष्य ( चिरंजीवी ) का  
आशीर्वाद देते हैं पर दीर्घायुष्य नरकमें भी होते हैं कितनेक  
बहु पुत्र का आशीर्वाद देते हैं वह कुकर कुर्कटादिके भी  
बहु पुत्र होते हैं पर जैनमुनियोंका धर्मलाभ तुमारा सर्व  
सुख अर्थात् इस परलोकमें तुमारा कल्याण के लिये है यह  
विद्वत्तामय शब्द सुन राजाको अतिशय आनंद हुवा राजाने  
सूरिजीका आदर सत्कार कर आसनपर विराजने कि अर्ज  
करी सूरिजी अपनी काम्वली बिचाके विराज गये उस समय के  
राजा लोगो को धर्म श्रवण करने का प्रेम था राजाने भवता  
पूर्वक सूरिजीसे अर्ज करी कि हे भगवान् ! धर्मका क्या  
लक्षण है किस धर्म से जीव जन्म मरण के दु खोसे निवृत्ति  
पाता है ? सूरिजीने समय पाके कहा कि:—





यज्ञार्थं पशवः सृष्टाः स्वयमेव स्वयं भुधाः ।

यज्ञोस्य भुक्त्यै सर्वस्य तस्माद्यज्ञे बधोऽबधः ॥

भावार्थ—ईश्वरने यज्ञ के लिये ही सृष्टिमें पशुओं को पैदा  
या है जो यज्ञ के अन्दर पशुओं कि बलि दी जाती है  
सब पशु योनिका दुःखोंसे मुक्त हो सिधे ही स्वर्गमें चले  
ते हैं और यज्ञ करनेसे राना प्रज्ञामे शान्ति रहती है.

सूरिजीने कहा अरे मिथ्यावादियों तुम स्वल्पसा स्वार्थ  
प्राप्त भक्षण ) के लिये दुनियों को मिथ्या उपदेश दे दुर्गति  
पात्र क्यों बनते हो अगर यज्ञमें बलिदान करनेसे ही  
र्ग जाते हैं तो

“ निहतस्य पशोर्यज्ञे । स्वर्गं प्राप्तिर्यदीष्य ते ।

स्वपिता यजमानेन । किन्तु तस्मान्न हन्यते ॥ ”

भावार्थ—अगर स्वर्गमें पहुँचाने के हेतु ही पशुओंको यज्ञमें  
मरते हो तो तुम्हारे पिता बन्धु पुत्र स्त्रियों स्वर्ग क्यों नहीं  
हुँचाते हों अथवा यजमान को बलि के जरिये स्वर्ग क्यों  
ही भेजते हो अरे पाखण्डियों अगर ऐसे ही स्वर्ग मीलती  
तो फीर क्या तुमको स्वर्ग के सुख प्रीय नहीं हैं देखिये  
। ख क्या कहता है.

“ यूपं कृत्वा पशुन् हत्वा । कृत्वा रुधिर कर्दमम् ।

यथेव गम्यते स्वर्गे । नरके केन गम्यते ॥ ”

• विचारा पशु उन निर्दय दैत्यो प्रति पुकार करते हैं कि

“ नाहं स्वर्गं फलोपभोगं तुष्टितो नाम्यार्थि तत्त्वकाया, ।

सतुष्टं रतुणं भक्षयेन सततं साधो न दुक्तं तत्र ॥

स्वर्गं यान्ति यदत्त्वया विनिहिता यज्ञे ध्रुव प्राणिनो ।

यज्ञं किं न करोपि मातृपितृभिः पुत्रैस्तथा यान्धवै ॥







करदों कि कोई भी शक्त्त कीसी प्राणिको मारेगा उसे प्राणि के बदले अपना प्राण देना पड़ेगा. राजा अहिंसा भगवती का परमोपासक बन गया । फिर आचार्यमीने जैनधर्म का स्वरूप मुनि या श्रावक धर्म का वर्णन कर विस्तारपूर्वक सुनाया फल यह हुआ की वहांपर ९०००० घरों वालोने जैन धर्म को स्वीकार कर आचार्यश्री के चरणोपासक बन गये. आगे चलकर इस श्रीमालनगर के जैन लोग अन्योन्य नगरमें निवास किया तब नगर का नामसे इन जैनो की श्रीमाल जाति प्रसिद्ध हुई-

श्रीमालनगरके लोगोने सूरिजीसे अर्ज करी कि हे कण्ठा-  
सिन्धु । आप के यहाँ पधारनेसे हजारो लाखो पशुओं को अभयदान मीला और क्रूर कर्मरूपि मिथ्यामत्त सेवन कर नरकमे जाने वाले जीवों को सम्यक्त्व रत्न की प्राप्ति हुई स्वर्ग मोक्ष का रहस्ता मीला अर्हन्त धर्म की बड़ी भारी प्रभावना हुई आप का परमोपकार का बदला इस भवमें तो क्या पर भवो भवमें देना हमारे लिये अशक्य है आपकी सेवा उपासना क्षणभर भी छोडनी नही चाहते हैं तथपि एक अरज करना हम बहुत जरूरी समजते हैं वह यह है की आवु के पास पद्मावती नामकी नगरी है वहां का राजा पद्मसेनने भी देवी के उपद्रव को शान्ति करने के हेतु अश्व मेघ यज्ञ का प्रारंभ किया है कल पूर्णिमा का वह यज्ञ है अगर यहां पर आप श्रीमानों के पधारना हो जाय तो जैसा यहां लाभ हुआ है वैसा ही वहां भी उपकार है । सूरिजीने इस बात को सहर्ष स्वीकार करलि और संघ को कह दीया की हम कलशुभे ही पद्मावती पहुंच जावेगे. गृहस्थ लोगोने









भावार्थ—जिस समय रामचन्द्रजी लंकाका विध्वंस किया उस समय हमारे पूर्वज चन्द्रचुड विद्याधरोका नायक साथमें था अन्योन्य पदार्थोंके साथ रावणके चैत्यालयसे लीलापन्नाकी पार्श्वनाथ प्रतिमा वैताव्यगिरिपर ले आये थे वह किमिश. आज मेरे पास है और मुझे ऐसा अटल नियम है कि मैं उस प्रतिमाका दर्शन सेवा कीयों वगर अन्न जल नहीं खाता हूँ मेरी इच्छा है कि भगवान् की प्रतिमा साथमे रख कर दीक्षा ले भावपूजा करता हुवा मेरा पूर्व नियमको अखण्डित करने रखु । आचार्यश्रीने अपना श्रुतज्ञानद्वारा भविष्यका लाभ-लाभपर विचार कर फरमाया कि “ जहां सुखम् ” इसपर रत्नचुड विद्याधरोका राजा बड़ा भारी हर्ष मनाता हुआ अपने वैमानवासी पांचसो विद्याधरो के साथ दीक्षा लेनेको तय्यार हो गये.

“ गुरुणा लाभं ज्ञात्वा तस्मै दीक्षा दत्त्वा ”

शेष विद्याधर दीक्षाका अनुमोदन करते हुवे श्री शङ्ख-पादि तीर्थों की यात्रा कर वैताव्यगिरिपर जाके सब समाचार कहा तत्पश्चात् रत्नचुडराजा के पुत्र कनकचुड को राजगद्दी बैठाया और वह सहकुटम्ब आचार्यश्री को घन्दन करनेको आये रत्नचुड मुनिका दर्शनकर पहला तो उपालंभ दीये बाद चारित्र्य का अनुमोदन कर देशना सुन घन्दन नमस्कार कर विसर्जन हुवे । रत्नचुड मुनि क्रमशः गुरु महाराज का धिनय सेवाभक्ति करते हुवे “ क्रमेण द्वादशांगी चतुर्दश पूर्वी वभूव ” कहने कि आवश्यकता नहीं है पहला तो आपका जन्म ही विद्याधर वंशमे दूसरा आप विद्याधरो के राजा तीसरा विद्यानिधि गुरुके चरणारविन्द की सेवा कि फिर कभी -



भावार्थ—जिस समय रामचन्द्रजी लंकाका विध्वंस किया था उस समय हमारे पूर्वज चन्द्रचुड विद्याधरोका नायक भी साथमें था अन्योन्य पदार्थोंके साथ रावणके चैत्यालयसे शीलापन्नाकी पार्श्वनाथ प्रतिमा वैताव्यगिरिपर ले आये थे वह क्रमशः आज मेरे पास है और मुझे पता अटल नियम है कि मैं उस प्रतिमाका दर्शन सेवा कीयों वगर अब जल नहीं लेता हूँ मेरी इच्छा है कि भगवान् की प्रतिमा साथमें रख दीक्षा ले भावपूजा करता हुआ मेरा पूर्व नियमको अखण्डित-पने रख। आचार्यश्रीने अपना श्रुतज्ञानद्वारा भविष्यका लाभालाभपर विचार कर फरमाया कि “ जहां सुखम् ” इसपर रत्नचुड विद्याधरोका राजा बड़ा भारी हर्ष मनाता हुआ अपने वैमानवासी पांचसौ विद्याधरो के साथ दीक्षा लेनेको तय्यार हो गये।

“ गुरुणा लाभं ज्ञात्वा तस्मै दीक्षा दत्त्वा ”

शेष विद्याधर दीक्षाका अनुमोदन करते हुवे श्री शङ्ख-यादि तीर्थों की यात्रा कर वैताव्यगिरिपर जाके सब समाचार कहा तत्पश्चात् रत्नचुडराजा के पुत्र कनकचुड को राज गादी बैठाया और वह सहकुटुम्ब आचार्यश्री को वन्दन करनेको आये रत्नचुड मुनिका दर्शनकर पहला तो उपालंभ दीये बाद चारित्र्य का अनुमोदन कर देशना सुन वन्दन नमस्कार कर विसर्जन हुवे। रत्नचुड मुनि क्रमशः गुरु महाराज का विनय सेवाभक्ति करते हुवे “ क्रमेण द्वादशांगी चतुर्दश पूर्वी वभूव ” कहने कि आवश्यकता नहीं है पहला तो आपका नम्र ही विद्याधर वंशमें दूसरा आप विद्याधरो के राजा तीसरा विद्यानिधि गुरुके चरणार्विन्द की सेवा कि फिर कभी कीस



हुवे दोनो आचार्यों की आज्ञावृत्ति हजारो मुनियों पृथ्वीमण्डल पर विहारकर जैनधर्मका खुब प्रचार कर रहेथे यज्ञवादियों का जौर बहुत दृढ़ गया था पर बौद्धोंका प्रचार आगे बढ़ रहाथा केइ राजाओने भी बौधधर्म स्वीकार करलीया था तथपि जैन जनताकी संख्या सबसे विशाल थी. इसका कारण जैनमुनियो कि विशाल संख्या और प्रायः सब देशोमे उनका विहार था दूसरा जैनोका तत्त्वज्ञान और आचार व्यवहार सबसे उच्च कोटीका था जैन और बौद्धोका यज्ञनिषेध के विषय उपदेश मीलता जुलताही था वेदान्तिक प्रायः लुप्तसा हो गये थे. जैन और बौद्धोके वाद विवाद भी हुवा करता था.

आचार्य रत्नप्रभसूरि एकदा सिद्धगिरि की यात्रा कर सध के साथ आर्षुदाचल की बात्रा करो वहांपर रात्रिमें चक्रेश्वरी देवीने सूरिजीको विनंति करीकी है दयानिधि ? आपके पूर्वजोने मरुभूमि मे विहार कर अनेक भव्योका कल्याण कर असंख्यात पशुओंकी बलिरूपी ' यज्ञ ' जैसे मिथ्यात्व को समूलसे नष्ट कर दीया पर भवितव्यता वसात् वह श्रीमालनगरसे आगे नहीं बढ सके वास्ते अर्ज है कि आप जैसे समर्थ महात्मा उधर पधारे तो बहुत लाभ होगा ? सूरिजीने देविकी विनंति को स्वीकार कर कदा की ठीक है मुनियों की तों जहां लाभ हो वहांही विहार करना चाहिये इत्यादि सन्मानित वचनोसे देवीको संतुष्ट कर आप अपने ५०० मुनियों के साथ मरुभूमिकी तरफ विहार किया ।

उपदेशपट्टन ( हालमे जिसे ओशीया कहते हैं ) की स्थापना-इधर श्रीमालनगरका राजा जयसेन जैनधर्मका पालन करता हुवा अनेक पुन्य कार्य्य कीया पट्टावलि नम्बर ३ ~



वस्था में मंत्रियो उमरावो को खानगीमे यह सूचन करदीथी की मेरे पीछे राजगादी चन्द्रसेन को देना कारण वह राज के सर्व कार्यों में योग्य है फिर राजातो अरिहंतादि पंचपरमेष्ठि का स्मरण पूर्वक मृत्युलोग और नाशमान शरीर का त्याग कर स्वर्गकी तरफ प्रस्थान कर दीया. यह सुनते ही नगरमे शोक के वादल छा गये. होंहोंकार मचगया. सबलोगोने मिलके राजाकी मृत्युक्रिया बडाही समारोह के साथ करी बाद राजगादी बैठानेके विषयमे दो मत हो गया एकमत का कहनाथा कि भीमसेन बडा है वास्ते राजका अधिकार भीमसेनको है दूसरा मत था की महाराज जयसेनका अन्तिम कहना है कि राज चन्द्रसेन को देना और चन्द्रसेन राजगुण धैर्य गांभीर्य वीरता-प्राक्रमी और राज तत्र चलानेमे भी निपुण है इन दोनो पार्टियोंके बाद विवाद तर्क वाद यहां तक बढगवाकी जिस्का निर्णयकरना भुजबलपर आपडा पर चन्द्रसेन अपने पक्षकारोको समझादीया की मुझे तो राजकी इच्छा नहीं है आप अपना हटको छोड दीजिये गृह कलेशसे भविष्यमें बड़ी भारी हानी होगा इत्यादि समझाने पर उनने स्वीकार कर लिया वस । फिर याही क्या ब्रह्मणों का और शिवोरासकोका पाणि नौ गज चढ गया बड़ी धामधूमसे भीमसेनका राजाभिषेक हो गया. पहला पहल ही भीमसेनने अपनि राज सत्ताका जौर जुलम जैनोपर ही जमाना शरु कीया कभी कभी तो राजसभामेभी चन्द्रसेनके साथ धर्म युद्ध होने लगा । तब चन्द्रसेनने कहा कि महाराज अब आप राजगादीपर न्याय करने को विराजे हैं तो आपका फर्ज है की जैनोको और शिवोको एक ही दृष्टिसे देखे जैसे महाराजा जयसेन परम जैन होने पर भी दोनो धर्म वालोको सामान दृष्टिसे ही दे





नामपर चन्द्रावती नगरी आबाद करीथी चन्द्रसेनने चन्द्रावती नगरी में अनेक मन्दिर बनाया जिसकी प्रतिष्ठा आचार्य स्वयंप्रभसूरि के करकमलोंसे हुई थी अस्तु चन्द्रावती नगरी विक्रमकी बारहवीं तेरहवीं शताब्दी तक ती बड़ी आबाद थी ३६० घरती क्रोडपति के थे और ३०० जैन मन्दिर थे हमेश स्वामीवात्सल्य हुवा करता था आज उसका खण्डहर मात्र रह गया है यह समयकी ही बलीहारी है

इधर भिन्नमाल नगर शिवोपासकों का नगर बन गया वहांका कर्त्ता हर्त्ता सब ब्राह्मण ही थे, राजा भीमसेन एक नाम का ही राजा था राजा भीमसेनके दो पुत्र थे एक श्रीपुंज दूसरा उपलदेव पदावली नं. ३ में लिखा है कि भीमसेनका पुत्र श्रीपुंज और श्रीपुंज के पुत्र सुरसुंदर और उपलदेव पर समय का मीलन करनेसे पहली पदावलीका कथन ठीक मीलता हुवा है। महाराज भीमसेनके महामातृ चन्द्रवंशीय सुवड था उसके छोटा भाईका नाम उदड था सुवड के पास अठारा क्रोडका द्रव्य होनेसे पहला प्रकोट में और उदड के पास तीनाणवें लक्षका द्रव्य होनेसे दूसरा कोटमें बसता था एक समय उदड के शरीरमें रात्रिमें तकलीफ होनेसे यह विचार हुवा कि हम दो भाई होने पर भी एक दूसरे के दुःख सुखमें काम नहीं आते हैं वास्ते एक लक्ष द्रव्य वृद्ध भाईसे ले में क्रोडपति हो पहला प्रकोट में जावस्तु शुभे उदड अपने भाई के पास ना के एक लक्ष द्रव्य की याचना करी इसपर भाईने कहा की तुमारे विगर प्रकोट शुन्य नहीं है ( दूसरी पदावलि में लिख है की भाई की ओरत ने ऐसा कहा ) कि तुम करज ले क्रोडपति होनेकी कौशीस करते हो इत्यादि यह अभिमान का वचन उदड को बड़ा दुःखदाई हुवा सट वहांसे निकल



यहांसे चल दीया रदस्ता में अश्व व्यापारियोंसे ५५ अश्व ( दूसरी पट्टावल्लिमें १८० अश्व लिखा है ) ले के ढेलीपुर ( दिल्ली ) पहुंचे वहां श्री साधु नामका राजा राज करता था वह छैमास राजका काम देखता था और छैमास अन्ते घर महलमें रहता था उत्पलदेव राजकुमार हमेशा राज दरबार में जाया करता था और एकेक अश्व भेट किया करता था. जब ५५ दिन व १८० दिनमें सब घोड़ें भेटकर चुका तब दूसरे दिन राजा राज सभामें आया और वह अश्व भेट की बात सुनी तब उपलदेव कुमार को बुलाया पुच्छनेपर कुमरने कहां में भिन्नमाल के राजा भीमसेन का पुत्र हूं नयानगर बसाने के लिये कुछ जमीन की याचना करने के लिये यहां आया हूं इस विषय पट्टावल्लियों के अलावे कुछ प्राचीन कवित भी मीलते है पर वह स्यात् पीच्छे से किसी कवियोंने रचा हुवा ज्ञात होता है। खेर राजा श्री साधु कुमर की वीरता पर मुग्ध हो एक घोड़ी दे दी की जावे जहापर उजड भूमि देखे वहां ही तुम अपना नया नगर बसा लेना पासमें एक शुकनी वेठा था उसने कडा कुमार साथ जहां घोड़ा पैशाव करे वहां ही नगर बसा देना, इसी शुकनी पर राजकुमार और इंज्री वहां से सवार हो चल धरे कि शुबह मंडोर से कुछ आगे उजडभूमि पड़ी थी वहां घोड़िने पैशाव किया वस वहां ही छड़ी रोप दी नगर बसाना प्रारंभ कर दीया उसीली जमीन दोनेसे उस नगर का नाम उपणपट्टन रख दीया मंत्रीश्वरने इधर उधर से लोगों को लाके नगरमें बसा रहे थे वह खबर भीन्नमाल में हुई वहां से भी उपलदेव उदड के कुटुम्ब साथ बहुत से लोग आये ।

“ ततो भीनमालात् अष्टादश सहस्र कुटुम्ब





1  
2  
3  
4  
5  
6  
7  
8  
9  
10  
11  
12  
13  
14  
15  
16  
17  
18  
19  
20  
21  
22  
23  
24  
25  
26  
27  
28  
29  
30  
31  
32  
33  
34  
35  
36  
37  
38  
39  
40  
41  
42  
43  
44  
45  
46  
47  
48  
49  
50  
51  
52  
53  
54  
55  
56  
57  
58  
59  
60  
61  
62  
63  
64  
65  
66  
67  
68  
69  
70  
71  
72  
73  
74  
75  
76  
77  
78  
79  
80  
81  
82  
83  
84  
85  
86  
87  
88  
89  
90  
91  
92  
93  
94  
95  
96  
97  
98  
99  
100  
101  
102  
103  
104  
105  
106  
107  
108  
109  
110  
111  
112  
113  
114  
115  
116  
117  
118  
119  
120  
121  
122  
123  
124  
125  
126  
127  
128  
129  
130  
131  
132  
133  
134  
135  
136  
137  
138  
139  
140  
141  
142  
143  
144  
145  
146  
147  
148  
149  
150  
151  
152  
153  
154  
155  
156  
157  
158  
159  
160  
161  
162  
163  
164  
165  
166  
167  
168  
169  
170  
171  
172  
173  
174  
175  
176  
177  
178  
179  
180  
181  
182  
183  
184  
185  
186  
187  
188  
189  
190  
191  
192  
193  
194  
195  
196  
197  
198  
199  
200  
201  
202  
203  
204  
205  
206  
207  
208  
209  
210  
211  
212  
213  
214  
215  
216  
217  
218  
219  
220  
221  
222  
223  
224  
225  
226  
227  
228  
229  
230  
231  
232  
233  
234  
235  
236  
237  
238  
239  
240  
241  
242  
243  
244  
245  
246  
247  
248  
249  
250  
251  
252  
253  
254  
255  
256  
257  
258  
259  
260  
261  
262  
263  
264  
265  
266  
267  
268  
269  
270  
271  
272  
273  
274  
275  
276  
277  
278  
279  
280  
281  
282  
283  
284  
285  
286  
287  
288  
289  
290  
291  
292  
293  
294  
295  
296  
297  
298  
299  
300  
301  
302  
303  
304  
305  
306  
307  
308  
309  
310  
311  
312  
313  
314  
315  
316  
317  
318  
319  
320  
321  
322  
323  
324  
325  
326  
327  
328  
329  
330  
331  
332  
333  
334  
335  
336  
337  
338  
339  
340  
341  
342  
343  
344  
345  
346  
347  
348  
349  
350  
351  
352  
353  
354  
355  
356  
357  
358  
359  
360  
361  
362  
363  
364  
365  
366  
367  
368  
369  
370  
371  
372  
373  
374  
375  
376  
377  
378  
379  
380  
381  
382  
383  
384  
385  
386  
387  
388  
389  
390  
391  
392  
393  
394  
395  
396  
397  
398  
399  
400  
401  
402  
403  
404  
405  
406  
407  
408  
409  
410  
411  
412  
413  
414  
415  
416  
417  
418  
419  
420  
421  
422  
423  
424  
425  
426  
427  
428  
429  
430  
431  
432  
433  
434  
435  
436  
437  
438  
439  
440  
441  
442  
443  
444  
445  
446  
447  
448  
449  
450  
451  
452  
453  
454  
455  
456  
457  
458  
459  
460  
461  
462  
463  
464  
465  
466  
467  
468  
469  
470  
471  
472  
473  
474  
475  
476  
477  
478  
479  
480  
481  
482  
483  
484  
485  
486  
487  
488  
489  
490  
491  
492  
493  
494  
495  
496  
497  
498  
499  
500  
501  
502  
503  
504  
505  
506  
507  
508  
509  
510  
511  
512  
513  
514  
515  
516  
517  
518  
519  
520  
521  
522  
523  
524  
525  
526  
527  
528  
529  
530  
531  
532  
533  
534  
535  
536  
537  
538  
539  
540  
541  
542  
543  
544  
545  
546  
547  
548  
549  
550  
551  
552  
553  
554  
555  
556  
557  
558  
559  
560  
561  
562  
563  
564  
565  
566  
567  
568  
569  
570  
571  
572  
573  
574  
575  
576  
577  
578  
579  
580  
581  
582  
583  
584  
585  
586  
587  
588  
589  
590  
591  
592  
593  
594  
595  
596  
597  
598  
599  
600  
601  
602  
603  
604  
605  
606  
607  
608  
609  
610  
611  
612  
613  
614  
615  
616  
617  
618  
619  
620  
621  
622  
623  
624  
625  
626  
627  
628  
629  
630  
631  
632  
633  
634  
635  
636  
637  
638  
639  
640  
641  
642  
643  
644  
645  
646  
647  
648  
649  
650  
651  
652  
653  
654  
655  
656  
657  
658  
659  
660  
661  
662  
663  
664  
665  
666  
667  
668  
669  
670  
671  
672  
673  
674  
675  
676  
677  
678  
679  
680  
681  
682  
683  
684  
685  
686  
687  
688  
689  
690  
691  
692  
693  
694  
695  
696  
697  
698  
699  
700  
701  
702  
703  
704  
705  
706  
707  
708  
709  
710  
711  
712  
713  
714  
715  
716  
717  
718  
719  
720  
721  
722  
723  
724  
725  
726  
727  
728  
729  
730  
731  
732  
733  
734  
735  
736  
737  
738  
739  
740  
741  
742  
743  
744  
745  
746  
747  
748  
749  
750  
751  
752  
753  
754  
755  
756  
757  
758  
759  
760  
761  
762  
763  
764  
765  
766  
767  
768  
769  
770  
771  
772  
773  
774  
775  
776  
777  
778  
779  
780  
781  
782  
783  
784  
785  
786  
787  
788  
789  
790  
791  
792  
793  
794  
795  
796  
797  
798  
799  
800  
801  
802  
803  
804  
805  
806  
807  
808  
809  
810  
811  
812  
813  
814  
815  
816  
817  
818  
819  
820  
821  
822  
823  
824  
825  
826  
827  
828  
829  
830  
831  
832  
833  
834  
835  
836  
837  
838  
839  
840  
84

इस विचारसे देवी सूरिजी के पास आई “ शासन देव्या  
 कथितं भो आचार्य अत्र चतुर्मासकं वरुं तत्र महालाभो भविष्यति ”  
 हे आचार्य । आप यहां मेरी विनतिसे चतुर्मास करो यहां  
 आपको बहुत लाभ होगा इस पर सूरिजी देवि की विनंतिको  
 स्वीकार कर मुनियोंसे कह दीया कि जो विकट तपस्या के  
 करने वाले हो वह हमारे पास रहे शेष यहां से विहार कर अन्य  
 क्षेत्रोंमें चतुर्मास करना इस पर ४६५ मुनि तो गुरु आज्ञासे  
 विहार किया “ गुरुः पंचत्रिंशत् मुनिभिः सहस्थितः ” आचार्यजी  
 ४५ मुनियों के साथ वहां चतुर्मास स्थित रहे । रहे हुवे मुनि-  
 योंने विकट यानि उत्कृष्ट चार चार मासकी तपस्या करली ।  
 और पहाड़ी की बनराजी में आसन लगा के सामाधि ध्यान  
 रं रमणता करने लग गये । “ ज्ञानामृत भोजनम् ”

इधर स्वर्ग सदृश उपद्रुश पकेन में राजा उत्पलदेव राम  
 राज कर रहा था अन्य राणियों में जालणदेवी ( सग्रामसिंहकी  
 पुत्री ) पट्टराणिथी उसके एक पुत्री जिसका नाम शोभाग्यदेवी  
 या वह घर योग्य होनेसे राजा को चिन्ता हुई घर की तलास  
 कर रहा था एकदा राणिके पास राजाने बात करी तब  
 राणिने कहा महाराज मेरी पुत्री मुझे प्राणसे बल्लभ है ऐसा  
 न हो की आप इसको दूर देशमें दे मेरे प्राणों को खो बैठो  
 आप ऐसा घर रहें वाई रात्रिमें सासरे और दिनमें मेरे  
 पास की, तलास करावे कि इत्यादि राजा यह सुन और भी  
 विचारमें पड़ गया ।

इधर उहड़दे मंत्रि के तिलकसी नाम का पुत्र अच्छा  
 लिखा पढ़ा रूपमें भी सुन्दर कामदेव तूल्य था उसे दे





देवितों अदृश हो गई ( दूसरी पट्टावलि में यह मुनि सूरिजी का शिष्य था ) लोगोंने यह सुन बड़ा दर्प मनाया और राजा व मंत्री के पास खुशमचरदी राजाने हुकम दीया कि उस मुनि को लावो, पर मुनि तो अदृश हो गया था तब सब कि सम्मति से सब लोगों के साथ कुमार का हांपान को ले सूरिजी के पास आये " श्रेष्ठि गुरु चरणे शिरं निवेश्य एवं कथयति भो दयालु ममदेवरूपमम गृहीशून्यो भवति तेन कारणेन-मम पुत्र भित्तां देहि " राजा और मंत्री गुरुचरणों में सिर टूका के दीनता के वचनों से कहने लगे । हे दयाल । करुणासागर आज मेरेपर द्वेष रूठ हुआ मेरा गृह शुन्य हुआ आप महात्मा हो रेखमें भी मेरा मारनेको समर्थ हो वास्ते में आपसे पुत्ररूपी भिक्षा की याचना करता हूं आप अनुग्रह करावे । इसपर उ० वीरधवल ने कहा " प्रासु जल मानीय चरणौ प्रक्षाल्य तस्य छंटितं " फासुकजल से गुरु महाराज के चरणों का प्रक्षाल कर कुमार पर छंट को बस इतना कहने पर देरी हो क्या थी गुरु चरणों का प्रक्षाल कर कुमार पर जल छांटतो ही " सहसात्कारेण स-जोष भूवः " एकदम कुमार बैठा हुआ इधर उधर देखने लगा तो चोतरफ दर्पका वाजिब बज रहा लोग कहने लगे कि गुरु महाराज की कृपासे कुमारजी आज नये जन्म आये हैं सब लोगोंने नगरमें जा पोषाको बदल के बटे गातावाजा के साथ सूरिजी को हजारों लाखों जिह्वाओं से आशीर्वाद देते हुये बडे हो समरोह के साथ नगर में प्रवेश किया. राजाने अपने खजानाघालो को हुकम दे दिया कि खजाना में बढिया से पढिया रत्नमणि माणक लीलम पत्ता पीरोजिया लशणियादि बहुमूल्य जवेरायत दो यह महात्माजी के चरणों में भेट करो ? तदानुस्वार रत्नादि भेट किये तथा ऊढ़ड छेष्टिने भी बहुत प्रव्य भेट किया ।



देवितों अदृश हो गई ( दूसरी पट्टावलि में यह मुनि सूरिजी का शिष्य था ) लोगोंने यह सुन बड़ा दर्प मनाया और राजा व मंत्री के पास खुशखबरदी राजाने हुकम दीया कि उस मुनि को लावो, पर मुनि तो अदृश हो गया था तब सब कि सम्मति से सब लोगों के साथ कुमर का झांपान को ले सूरिजी के पास आये " श्रेष्ठि गुरु चरणे शिरं निवेश्य एवं कथयति भो दयालु ममदेवरूपमम गृहीशून्यो भवति तेन कारणेन-मम पुत्र भिक्षां देहि " राजा और मंत्री गुरुचरणों में सिर झुका के दोनता के बचनों से कहने लगे । हे दयाल । करुणासागर आज मेरेपर देव रूष्ट हुआ मेरा गृह शून्य हुआ आप महात्मा हो रेखमें भी मेख मारनेको समर्थ हो वास्ते में आपसे पुत्ररूपी भिक्षा की याचना करता हूं आप अनुग्रह करावे । इसपर उ० वीरधवल ने कहा " प्राप्नु जल मानीय चरणौपक्षान्य तस्य छंटितं " फालुकजल से गुरु महाराज के चरणों का प्रक्षाल कर कुमर पर छट की घस इतना कहने पर देरी ही क्या थी गुरु चरणों का प्रक्षाल कर कुमर पर जल छांटतो ही " सहसात्कारेण स-ज्जीव भूवः " एकदम कुमर घेठा हुआ हृधर उधर देखने लगा तो चोतरफ दर्पका धार्जिष बज रहा लोग कहने लगे कि गुरु महाराज की कृपासे कुमरजी आज नये जन्म आये हैं सब लोगाने नगरमें जा पोषाकी बदल के बड़े गाजाबाजा के साथ सूरिजी को हजारों लाखों जिह्वाओं से आशीर्वाद देते हुये बड़े ही समरोह के साथ नगर में प्रवेश किया, राजाने अपने खजानाघालों को हुकम दे दिया कि खजाना में षड्रिया से पड्रिया रत्नमणि मानक लीलम पत्ता पीरोजिया लशणिषादि बहुमूल्य जयेरायत्त हो यह महात्माजी के चरणों में भेट करो ! तदानुस्सार रत्नादि भेट किये तथा ऊदड भेटिने भी बहुत द्रव्य भेट किया ।

“गुरुणा कथितं मम न कार्ये” आचार्यश्रीने फरमाया कि मेने तो खुद ही वैताञ्जगिरि का राज और राज खजाना त्याग के योग लिया है अब हम त्यागियोंको इस द्रव्यमें क्या प्रयोजन है यह तो गृहस्थ लोगोंका भूषण है अगर इसे देशहित धर्महित में लगाया जाय तो पुण्योपाजित हो सकता है नहीं तो दुर्गतिका ही कारण है इत्यादि । अगर हमें खुश करना चाहते हो तो “भवद्भिः जिनधर्मो गृह्यतां” आप सब लोग पवित्र जैनधर्मको स्वीकार करो जिससे तुमारा कल्याण हो इत्यादि ।

यह सुन श्रेष्ठ वैगरह राजाके पास जाके सब हाल सुनाया आचार्यश्री की निःस्पृहीताने राजाके अन्तःकरणपर इतना असर डाला कि यह चतुरांग जैन्या और नागर्गिक जनोंको साथ ले सृग्जिजीको यन्दन करनेको बड़े ही आडम्बर में आया आचार्यश्रीको यन्दन कर बोलाकि हे भगवान् ! आपतो हमारे जैसे पामर जीवों पर बड़ा भारी उपकार किया है जिसका बदला इस भयमें तो क्या परमबोधयमें देने को हम लोग असमर्थ हैं हमारी इच्छा आपकी के मुखादिन्दसे धर्म भवण करने की है ।

आचार्यश्रीने उद्यम्यर और मधुरभाषामें धर्मदेशना देना प्रारंभ किया हे राजेन्द्र ! इस आरापार संसारके अन्दर जीव परिश्रमण करते हुए का अनन्तकाल हो गया कारण कि सुश्रमवाटर तिगोदमें अनन्तकाल पृथ्वीपाणि ने उद्यायुमें अमन्याताकाल परंपकेन्द्रियमें अनन्तानन्तकाल परिश्रमण किया याद कुछ पुन्य बट जानेमें श्रेन्द्रिय पर्यं तेन्द्रिय चार्गिन्द्रिय य त्र्यं च पांचिन्द्रिय अनायं मनुष्य या अकाम पुन्योदय देय

योनिमें भ्रमन किया पर उत्तम सामग्री के अभाव शुद्ध धर्म न मिला, हे राजन् ! सुकृतकर्मका सुकृत फल और दुःकृत कर्मका दुःकृतफल भविष्यमें अवश्य मिलता है सबसे पहला तो जीवोको मनुष्यभव मिलना मुश्किल है कदाचू मनुष्य भव मील गया तो आर्यक्षेत्र उत्तम कुल शरीरनिरोग इन्द्रियोपूण और दोषायुष्य कमशः मिलना दुर्लभ है कदाच यद्य सव सामग्री मील जावे तो सद्गुरुओंकी सेवा मिलना कठिन है यह आप जानते हो कि गुरु विगर्ह ज्ञान हो नहीं सकता है जगत् में ऐसे भी गुरु नाम धरानेवाले पाये जाते हैं की बह भांगों पीना, गाजा चडश उडाना, व्यभिचार करना, यज्ञहोम के नाम हजारों लाखों पशुओंके प्राण लुटना मांस मदिरा भक्षण करना इत्यादि अत्याचार करने वालोंसे सद्गुणोंकी प्राप्ति कभी नहीं होती है वास्ते आत्मकल्याणके लिये सबसे पहला सद्गुरु की आवश्यकता है सद्गुरु मिलने पर भी सदागम श्रवण करणा दुर्लभ है विगर्ह सुने दितादित की खबर नहीं पड सकती है अगर सुन भी लीया तो सत्य बातको स्वीकार करना बडा ही मुश्किल है स्वीकार करने पर भी उस पर पान्शो रख उसमें पुरुषार्थ करना सबसे कठिन है ।

हे धराधिप । इस पृथ्वीपर कई धर्म प्रचलित हैं सबसे प्राचीन और सर्वोत्तम है तो एक जैन धर्म है जैन धर्म का तत्त्व-ज्ञान इतना उघा कोटि का है की माधारण मनुष्य उसमें एकदम प्रवेश होना असंभव है जैन धर्म का आचार व्यवहार भी सब से उच्चे दर्जा का है अहिंसा परमो धर्मः जैन धर्म का मुख्य सिद्धान्त है यह धर्म सपूर्ण ज्ञानवाले सर्वज्ञ का फरमावा हुया है मांस मदिरा सिकार परस्त्रीगमन घैश्यागमन चीं



हैं (३) तीसरा व्रतमें पूर्वोक्त स्थूल चौरी करना मना है (४) चतुर्थ व्रत में परस्त्रि वैश्यादि से गमन करना मना है (५) पंचवा व्रत में धनमाल राज स्टेट खगेरद का नियम करने पर अधिक बढ़ाना मना है (६) छठा व्रत में चोतरफ दिशाओं में जितनी भूमिका में जानेका प्रमाण कर लिया हो उससे अधिक जाना मना है (७) सातवा व्रत में पटला तो भक्षाभक्षका विचार है मांस मंदिर वासीविद्वल सहैत मक्खनादि जो कि जिसमें प्रचुर जीवों की उत्पत्ति हो वह खाना मना है दूसरा व्यापरा पेक्षा है जिसमें ज्यादा पाप और कम लाभ और तुच्छव्यापर हो उसे व्यापार रूपी कर्मादान करना मना है (८) अन्तर्था दंडव्रत है जोकी अपना स्वार्थ न होनेपर भी पापकारी उप-देशका देना दूसरों की उत्पत्ति देख इर्षा करना आवश्यकतासे अधिक हिंसा कारी उपकरण एकत्र करना प्रमाद के बस ही घृत तेल दुग्ध दही छास पाणि के चरनन खुले रख देना इत्यादि (९) लौषा व्रतमें हमेशों समताभाव सामायिक करना (१०) दशवा व्रतमें दिशादि मेरटे हुये व्रव्यादि पदार्थों के लिये १४ नियम याद करना (११) ग्यारवा व्रतमें आत्मावी पुष्टिरूप पौषध करना (१२) बारहवा व्रत अतिथी महात्माओंको सुपात्रदान देना इन गृहस्थधर्म पालने वालीको हमेशों परमात्मा की पूजा करना नये नये तीर्थों की यात्रा करना स्वाधर्मि भाइयों के साथ वारसत्यता और प्रभावना करना लौषहवा के लिये दने वहां तक अभिरिष पट्टा पीराना, जैलमन्दिर जैलमृति दान साधु साध्वियों भावप भाविषाओं पर सात दिनमें समर्प होनेपर दान की परंपरा और जितसासनेमति से तत्प्रसन्न धन लगा देना गृहस्थोंका आचार है आगे पद से मुनिपद की इत्या-  
दि सर्व प्रकारसे तीर्थरिसादा दान पद दान दीक्षा की





है (३) तीसरा व्रतमे पूर्वोक्त स्थूल चौरी करना मना है (४) चतुर्थ व्रत में परस्त्रि वैश्यादि से गमन करना मना है (५) पंचवा व्रत में धनमाल राज स्टेट वगेरह का नियम करने पर अधिक बढ़ाना मना है (६) छठा व्रत में चोतरफ दिशाओं में जितनी भूमिका में जानेका प्रमाण कर लिया हो उससे अधिक जाना मना है ( ७ ) सातवा व्रत में पढ़ला तो भक्षाभक्षका विचार है मांस मंदिर वासीविद्वल सहेत मक्खनादि जो कि जिस्मे प्रचूर जीधों की उत्पत्ति हो वह खाना मना है दूसरा व्यापरा-पेक्षा है जिस्मे ज्यादा पाप और कम लाभ और तुच्छव्यापर हो एसे व्यापार रूपी कर्मादान करनामना है (८) अनर्था दंडव्रत है जोकी अपना स्वार्थ न होनेपर भी पापकारी उप-देशका देना दूसरों की उन्नति देख इर्षा करना आवश्यकतासे अधिक हिंसा कारी उपकरण एकत्र करना प्रमाद के वस हो घृत तेल दुग्ध दही छास पाणि के चरतन खुले रख देना इत्यादि ( ९ ) नौवा व्रतमे हमेशों समताभाव सामायिक करना (१०) दशवा व्रतमे दिशादि मे रहे हुवे द्रव्यादि पदार्थों के लिये १४ नियम याद करना (११) ग्यारवा व्रतमे आत्माकी पुष्टिरूप पौषध करना (१२) बारहवा व्रत अतित्थी महात्माओको सुपात्रदान देना इन गृहस्थधर्म पालने वालोको हमेशों परमात्मा की पूजा करना नये नये तीर्थों की यात्रा करना स्वाधर्म भाइयों के साथ वात्सल्यता और प्रभाषना करना शीघ्रदया के लिये घने वहां तक अमरिय पदटा फीराना, जैनमन्दिर जैनमूर्ति ज्ञान माधु-साधियों भाषक भाषिकाओं एव सात क्षेत्रमे नमंद होनेपर द्रव्य को खरचना और जिनशासनोन्नति मे नमन कर देना देना गृहस्थोंका आचार है आगे बढ के मुनिव्रत की इच्छा-वाले सर्व प्रकारसे जीधर्हिंसाया त्याग एवं इष्ट होइना चीने



हे प्रभो । इसका कारण यह था कि हम लोगों को पहलासे ही ऐसा शिक्षण दीया जाता था की जैन नास्तिक है ईश्वर को नहीं मानते हैं शास्त्रविधिसे यज्ञ करना भी वह निषेध करते हैं नम्र देव को पूजते हैं अहिंसा २ कर जनताका शौर्य पर कुठार चलाते हैं इत्यादि पर आज हमारा शोभाग्य है कि आप जैसे परमोपकारी महात्माओंके मुखार्थिन्दसे अमृतमय देशना श्रवण करनेका समय मीला, हे दयाल । आज हमारा सब भ्रम दूर हो गया है नतीं जैन नास्तिक है न जैनधर्म जनताको निर्बल कायर बनाता है निस्मे ईश्वरत्व है उसे जैनधर्म ईश्वर (देव) मानते हैं जैनधर्म एक पवित्र उच्च कोटीका स्वतंत्र धर्म है हे विभो । इतने दिन हम लोग मिथ्यात्व हपी नशेमें ऐसे ब्रैभान हो मिथ्या फांसीमें फस कर सरासर व्यभिचार अधर्मका धर्म समझ रखाथा सत्य है कि विना परीक्षा पीतलकोभी मनुष्य सोना मान धोखा खालेता है वह युक्ति हमारे लिये ठीक चरतार्थ दीती है हे भगवन् । हम तो आपके पहलेसेही ऋणि है आप श्रीमानोंने एक हमारे जमा-इकोही जीवतदान नहीं दीया परहम सबको एक भवके लियेही नहीं किन्तु भवोभयके लिये जीवन दीया है नरकके रहस्ते जाते हुवे हमको स्वर्ग मोक्षका रहस्ता बतला दिया है इत्यादि सुरिजी के गुण कीर्तन कर रानाने कदा की हम सब लोग जैनधर्म स्वीकार करने को तैयार हैं आचार्यश्रीने कदा “ जदांसुखम् ” इस सुअवसर पर एक नया चमत्कार यह हुआ की आकाशमें सनघन अवाप्तो और साणकार होना प्रारंभ हुआ सब लोग उर्ध्व दृष्टि कर देखने लगे इतनेमें तो वैमानोसे उत्तरते हुये सैकड़ों विपाधर नरनारियो सादृष्ट शरीर सुरिजी के चरण कमलोंमें घन्दना करने लगे इतनासे









रात्रि ॥ प्रानेन मर्यादीन कुटुंबियोंके साथ मरिजीके वामक्षेत्रमें जैन धर्म अंगीकार किया, योग मशजिन  
 रात्रि म्यापना हुई, यदनार्थ आप हृष्ट देव विद्याभंगेन पुनः कुटुंबी ॥ (पृ. २६)







1 और प्रगते सागानीत कुटुंबियों के साथ सरिनी के नाम में मेरे जेन में  
 रज्जि स्थापना हुई, यदनीय आण हणु मेव चिप मेन मरुत म



राजा उपलदेवादि सब को उत्साहावृद्धक धन्यवाद दीया कि आप लोगोंका प्रचल पुन्योदय है कि ऐसे गुरु मडाराज मीले हैं आपको कोटीशः धन्यवाद है कि मिथ्या फांसी से छुट पवित्र धर्म को स्वीकार कीया है आगे के लिये आप ज्ञान श्रद्धा पूर्वक इस धर्म का पालनकर अपनि आत्मा का कल्याण करते रहना राजा उपलदेव उन विद्याधरों का परमोपकार माना और स्वाधर्मि भाइ सभजन महमान रहने की विनति करी इसपर वह आपसमे घातसत्यता करते हुवे वाद देवियों और विद्याधर सूरिजी को वन्दन नमस्कार कर विसर्जन हुवे ।

अब तो उपवेशपुर के घर घरमें जैन धर्म की तारीफ होने लगी और रहे हुवे लोग भी जैन धर्म को स्वीकार करने लगे यह घात घाममार्गिमत्त के अध्यक्षो के मटों तक पहुंच गई की एक जैन सेवडा आया है वह न जाने राजा ख्यापर क्या जाबु डारा कि यह सबको जैन बना दीया अगर उस पर कुछ प्रयत्न न किया जायेगा तो अपनि तो सब की सब दुकानदारी उठ जायेगा । यह तो उनको विश्वास था कि राजा प्रज्या को जैसे पाठ पढायेगे वैसे ही मानने लग जायेंगे सेवडाने उसे जैन बनाया तो चलो अपुन फीरसे राय बना देंगे पना मोच यह सब जमान श्री जमान सज धज के राज सभामे आये पर जैसे किसीका सत्य धेय लुट लेनेसे उन पर दुर्भाव होता है वैसे उन पासणिलीयो पर राजा प्रजा का दुर्भाव हो गया था. राजाने न तो उनको आदर सम्मान दीया न उने मोलाया इसपर यह लोग कहने लगे कि 'रे राजन' हम जानते हैं कि आप अपने पूर्वजो से क्या ज्यादा पदिक धर्म को तोते अर्थात् पूर्वजो की परम्परा पर तसीर देर



ऐ लोगो में आज आमतौर से जाहिर करताहूँ कि जैन धर्म एक आधुनिक धर्म है पुनः वह नास्तिक धर्म है पुनः वह ईश्वर को नहीं मानते हैं इनके मन्दिरों में नग्न देव है इत्यादि । मगर खुरिजी के पास बैठे हुआ वीरधवल्लोपाध्याय ने गभिर गन्दा में घड़ि योग्यता से बोला कि जैन धर्म आधुनिक नहीं परन्तु प्राचीन धर्म है जिस जैन धर्म के विषय में वेद साक्षि दे रहे हैं ब्रह्मा विष्णु और महादेवने जैन धर्म को नमस्कार दिया है पुराणोक्तियों ने भी जैन धर्म को परम पवित्र माना है । देखा पहला प्रकरण में जैन धर्म की प्राचीनता ) और जैन धर्म नास्तिक भी नहीं है कारण जैन धर्म जीवात्मीय पुन्य पाप आश्रय नश्वर निज्जरा पन्थ और मोक्ष तथा लोकभक्त



मिथ्यः त्व मार्ग लुप्त होता गया. राजा उपलदेव आदि सूरिजी कि हमेशो सेवा भक्ति करते हुवे व्याख्यान सुन रहे थे सूरिजीने तत्त्वमिमंसा तत्त्वसार मत्त परिक्षादि केइ ग्रन्थ भी निर्माण किये थे एक समय राजाने पुच्छा कि भगवान् यहां पाखण्डियोंका चिरकालसे परिचय है स्यात् आपके पधार जानेके बाद फिरभी इनका दाव न लग जावे वास्ते आप पसा प्रबन्ध करावे की साधारण जनताकि श्रद्धा जैनधर्मपर मजबुत हो जावे ? सूरिजीने फरमाया कि इस के लिये दो रदस्ता है ( १ ) जैन-तत्त्वोंका ज्ञान होना ( २ ) जैन मन्दिरोंका निर्माण होना । राजाने दोनों बातों को स्वीकार कर एक तरफ तो ज्ञानाभ्यास बढ़ाना सुरू कीया दूसरी तरफ लुणाग्री पहाड़ी के पास की पहाड़ी पर एक मन्दिर बनाना प्रारम्भ करदीया । उसी नगरमें ऊढढ मंत्री पहले से ही एक नारायणका मन्दिर बना रहा था पर वह दिनकों बनाये और रात्रिमें पुनः गिरजावे इससे तंगहो सूरिजीसे इसका कारण पुच्छा तों सूरिजीने कहा कि अगर वह मन्दिर भगवान महाधीर के नाम से बनाया जाय, तो इसमें कोई भी देव उपद्रव नहीं करेगा—चतुर्मास के दिन नवदीक्ष आ रहे थे राजाके मन्दिर तैयार होनेमें बहुत दिन लगनेका संभव था वास्ते मंत्री का मन्दिर को शीघ्रतासे तैयार करवाया जाय कि यह प्रतिष्ठा सूरिजी के करकमलोसे हो इसवास्ते विशाल संस्थामे मजुर लगाये महाधीर प्रभुका मन्दिर इतना शीघ्रतासे तैयार करवायाकि यह स्वर्णकालमें ही तैयार होने लगा कारण कि बहुतसा काम तो पहले से ही तैयार था. इधर समयने अर्ज करी कि भगवान मन्दिर तो तैयार होनेमें है पर इसमें विराजमान होने योग्य मूर्तिही डरकर है ? सूरिजीने कहा भयंता रसो मूर्ति तैयार हो रही है । इधर दवा हो रहा





वान के दर्शनोका पिपासु हो रहा है इत्यादि ? सूरिजीने सोचा की बिब तय्यार होनेमें अभी सातदिनकी देरी है परन्तु दर्शनके लिए आतुर हुआ संघके उत्साहको रोकना भी तो उचित नहीं है, भवितव्यता पर विचार कर सूरिजी अपने शिष्य समुदायके साथ संघमें सामिल हो जहां भगवानकी मूर्ति थी वहां जा कर जमीनसे बिब निकलवा कर नमस्कार पूर्वक हस्तीपरारूढ करवा के धामधूम पूर्वक भगवान्का नगर प्रवेश करवाया सबसे बड़ाही आनंद मंगल और घरघर उत्सव बधा-मणा हुआ कारण पहला उन लोगोंने दिसक और विकारी देवि देवतों की मूर्तियोंको देखी थी पर आज भगवान् की शान्त मुद्रा निर्विकार किसी प्रकारकी चेष्टा रहित पद्मासन मूर्ति देख लोगोंकी जैनधर्मपर और भी बृद्ध श्रद्धा होगई । ऊहड़-मंथ्रीका बनाया हुआ महावीर मन्दिरके एक विभागमें भगवान् को विराजमान किया, यहांपर एक विशेष बात यह हुई कि देविने मूर्तिको सर्वांग सुन्दर बनाना प्रारंभ कियाया अगर सात दिन और देर कि गई होती तो देविकी मनसा मुता-बीक कार्य हो जाता पर आतुरता करनेसे भगवान् के हृदय पर निवृफल जीतनी गांठो ( स्तनाकार ) रह गई इससे देवि नाराज हुई पर सूरिजी साथमें ये वास्ते उसका कोई ज़ोर न चला “ भवितव्यता बलवान् है ”

इधर आश्विन मासकि नौरात्री नजदीक आने लगी तब संघाग्रेसर लोगोंने सूरिजी से अर्ज करी कि हे प्रभो ! आप तो हमें कहते हो कि अगरह अपराध किसी जीवोंको तकलीफ नहीं देना पर हमारे यहां चमुदादेवि पत्नी निर्दय है कि इस नौरात्रीमें प्रत्येक घरसे एकैक भैसा और प्रत्येक मनुष्यमें

7

8

9

10

11

वान के दर्शनोका पिपासु हो रहा है इत्यादि ? सूरिजीने सोचा की बिब तय्यार होनेमें अभी सातदिनकी देरी है परन्तु दर्शनके लिए आतुर हुषा संघके उत्साहको रोकना भी तो उचित नहीं है, भवितव्यता पर विचार कर सूरिजी अपने शिष्य समुदायके साथ संघमें सामिल हो जहां भगवानकी मूर्ति थी वहां जा कर जमीनसे बिब निकलवा कर नमस्कार पूर्वक हस्तीपरारूढ करवा के धामधूम पूर्वक भगवान्का नगर प्रवेश करवाया सघमें बड़ाही आनंद मंगल और घरघर उत्सव यथा-मणा हुषा कारण पहला उन लोगोंने हिसक और विकारी देवि देवतों की मूर्तियोंको देखी थी पर आज भगवान् की शान्त मुद्रा निर्विकार किसी प्रकारकी चेष्टा रहित पद्मासन मूर्ति देख लोगोंकी जैनधर्मपर और भी बृहद् भ्रष्टा होगई । ऊहढ-मंत्रीका बनाया हुषा महावीर मन्दिरके एक विभागमें भगवान् को विराजमान किया. यहांपर एक विशेष बात यह हुई कि देविने मूर्तिको सर्वांग सुन्दर बनाना प्रारंभ कियाथा अगर सात दिन और देर कि गइ होती तो देविकी मनसा मुता-बीक कार्य हो जाता पर आनुरता करनेसे भगवान् के हृदय पर निबुफल जीतनी गांठो ( स्तनाकार ) रह गइ इससे देवि नाराज हुई पर सूरिजी साथमें थे वास्ते उसका कोई जोर न चला “ भवितव्यता बलवान् है ”

इधर आश्विन मासकि नौरात्रो नजदीक आने लगी तब संघाग्रेसर लोगोंने सूरिजी से अर्ज करी कि हे प्रभो ! आप तो हमें कहते हो कि बगरह अपराध किसी जीवोंको तकलीफ नहीं देना पर हमारे यहां चमुडादेवि एसी निर्दय है कि इस नौरात्रोमें प्रत्येक घरसे एकैक भैसा और प्रत्येक मनुष्यसे







अर्ज करी थी कि आप राता प्रज्या को जैनी तो बनाते हो पर मेरे कडडका मरडका मत छाडाना ? पर आपने तो ठोक दी क्या इत्यादि देवि का बचना सुन सूरिजी महाराजने कहा देवि यह नलयेर तो तेरा कडडका है और गुलराव तेरा मरडका है इस को स्वीकार क्यों नहीं करती हा भो देवि पूर्व जन्म में तो तुमने अच्छा सुकृत किया बहुत जीवों को जीतव दान दिया तब तुमे देव योनि मीली है पर यहां पर यह घोर हिंसा करवा के तुम किस योनि में जाना चाहती हो हे देवि अच्छा मनुष्य भी कुतूहल के लिये निरर्थक हिंसा करना नहीं चाहता है तो तुम ज्ञानवान् देवि होके फक्त कुतूहल के मारी हजारो जीवों के प्राणों पर छुरा चलवाना क्यों पसंद किया है इत्यादि उपदेश देने पर देवि उस बखन तो शान्त हो गई पर गृहस्थ वर्ग घबरा रहे थे सूरिजीने उन पर वासक्षेप कर विसर्ज्जन कीये पर देवि सर्वता शान्त नहीं हुई थी. अज्ञान के घस हो यह रहा देख रही थी कि कभी आचार्यश्री प्रमाद मे हो तो मैं मेरा बदला लू ।

“ एकदा छलं लब्ध्या देव्या आचार्यस्य कालवेलायां किंचित् स्वद्यायादि रहितस्य वामनैत्रे भूराधिष्ठिता वेदना जातः ”

आचार्यश्री सदैव अप्रमत्तपने ही रहते थे पर एकदा अकाल में स्वद्याय ध्यान रहित होने से देविने आपश्री के वामा नैत्र में वेदना कर दी वह भी एसी कि कायर मनुष्य उसे सहन भी नहीं कर सके पर सूरिजी को तो उस की परवा ही नहीं थी उन्होने तो अपने दुष्ट कर्मों का देना चुकाने को दुकान दी खोल रखी थी तत्पश्चात् देवि अपना असली रूप कर आच . श्री के पास आ के कहने लगी कि भो आचार्य मैं





सम्यक्त्व धारिणि हुई मांस तो क्या पर देवीने पत्नी प्रतिष्ठा कर कद दीया कि आज से मेरे रक्त वर्ण का पुष्प तक भी नहीं छुटेगा. और मेरे भक्त जो उपकेशपुर में महावीर के विग्रह की पूजा करते रहेंगे आचार्य रत्नप्रभसूरि और इन की संतान की सेवा उपासन करते रहेंगे उन के दुःख संकट को मैं नियारण करूंगी और विशेष काम पढ़ने पर मुझे जो आराधन करेगा तो मैं कुमारी कन्या के शरीर में अवतीर्ण हो आउंगी इत्यादि देवी के वचन सुन और भी “ श्री सच्चिका देव्या वचनात् क्रमेण श्रुत्व प्रचुग जनाः श्रावकत्वं प्रतिपन्नाः ” बहुत से लोग जैन धर्म को स्वीकार श्रावक बन गये और जैन धर्म का बड़ा भारी उद्योत हुआ.

उपकेश पट्टन में भगवान् महावीर प्रभु का सिखर बद्ध मंदिर तय्यार हो गया तत्पश्चात् प्रतिष्ठा का मुहूर्त मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमि गुरुवार को निश्चित हुआ सब सामग्री तैयार हो रही थी इधर रत्नप्रभसूरि की आज्ञा से ४६५ मुनि विहार किया था उन से कनकप्रभादि कितनेक मुनि कोरंटपुर ( कोह्ला पट्टन ) में चतुर्मास किया था आपन्नी के उपदेश से वहां के श्रावक वर्गने भगवान् महावीर का नवीन मन्दिर बनवाया निस्के प्रतिष्ठा का मुहूर्त भी मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमि का था तब कोरंट सघ एकत्र हो आचार्य रत्नप्रभसूरि को आमन्त्रण करने को आये “ तेनावसरे कोरंटकस्य श्राद्धानां आह्वानं आगतं ” अर्ज करने पर सूरिजीने कहा कि इस टेम पर यहां भी प्रतिष्ठा है वास्ते तुम वहां पर रहे कनकप्रभादि मुनियों से प्रतिष्ठा करवा लेना. इसपर



सप्तत्या (७०) घटसराणं चरम जिनपतेर्भुक्त जातस्य वर्षे,  
पंचम्यां शुक्ल पक्षे सुर गुरु दिवसे द्वाष्ट्येण सन्मुहूर्ते ।

रत्नाचार्यैः सकल गुणयुक्तैः सर्व संधानुज्ञातैः

श्रीमद्भीरस्य विवे भव शत मथने निर्मितेयं प्रतिष्ठाः । १।

उपकेशे च कोरंटे तूल्यं श्रीवीरविषयोः

प्रतिष्ठा निर्मिता शक्त्या श्रीरत्नप्रभसूरिभिः । १।

कोरट गच्छ में भी बड़े बड़े विद्वानाचार्य हो गये थे जिनके कर कमलो से कराइ हुई दजारो प्रतिष्ठा का लेख मीलते हैं वर्तमान शिलालेखों में भी कोरंट गच्छाचार्यों के बहुत शिलालेख इस समय मौजूद हैं वह मुद्रित भी हो चुके हैं समय की बलिदारी है जिस गच्छ में दजारो की मरुया में मुनिगण भूमिपर विहार करते थे वहां आज एक भी नहीं बि. सं. १९१४ तक कोरट गच्छ के श्री अनीतसिंहसूरि नाम के श्री पूज्य थे वह बीकानर भी आये थे लंगोट के बड़े ही सच्चे और भारी चमत्कारी थे अब तो सिर्फ कोरंट गच्छीय महात्माओं कि पोसालों रह गई हैं और वह कोरंट गच्छ के श्रावकों की घंटाघलियों लिखते हैं तद्यपि जैन समाज कोरंट कि आभारी हैं और उस गच्छ का नाम आज भी अमर है ।।।

आचार्य रत्नप्रभसूरि उपकेश पटन में भगवान् महावीर प्रभु के मंदीर की प्रतिष्ठा करने के बाद कुच्छ रोज वहां पर विराजमान रहें धावक वर्ग को पूजा प्रभावना स्वामिवात्सल्य सामायिक प्रतिक्रमण व्रत प्रत्याख्यानादि सब क्रिया प्रवृत्तियों का अभ्यास करवा दीया था

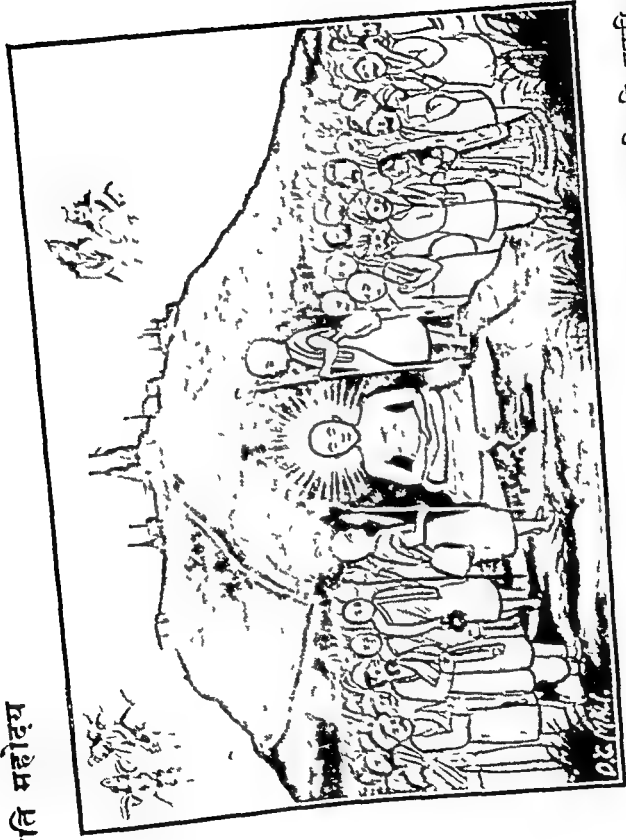
आचार्यरत्नप्रभसूरिने यह सुना था कि मेरे वैक्य रूप



होगा वास्ते जातिधर्म बना देना बहुत लाभकारी होगा इस वास्ते सब साधुओं को कम्मर कस के अन्य लोगों को प्रति-  
बोध दे दे कर इस जातियों की वृद्धि करना बहुत जरूरी  
बात है इत्यादि वार्तालाप के बाद वनकप्रभसूरि की तो उप-  
केशपट्टन की तरफ विहार करने कि आज्ञा दी वनकप्रभ-  
सूरिने उपकेशपट्टन पधार के उपलदेवराजा के बनाये हुवे  
पार्श्वनाथ मन्दिर की प्रतिष्ठा करवाई इत्यादि अनेक शुभ  
कार्य आपके उपदेश से हुवे और सूरिजीने आप उसी प्रान्त  
मे व अन्य प्रान्तो मे विहार करने का निर्णय किया । रत्नप्रभ  
सूरिने फिर अपने १४ वर्ष के जीवन मे हजारो लाखो नये  
जैन बनाये जिस्मे पोरवाडो से संबन्ध रखनेवालों को पोर-  
वाडो मे मीला दिया श्रीमालो से सम्बन्ध रखनेवालों को श्री-  
मालो मे और उपकेश वंश से तालुक रखनेवालों को उपकेश  
वंश मे मीलाते गये उपकेशपुर के गौत्रो के सिवाय (१) चरड  
गोत्र ( २ ) सुघड गोत्र ( ३ ) लुग गोत्र ( ४ ) गटिया गोत्र  
एवं चार गौत्रोंकी और स्थापना करी आपभीने अपने करकम-  
लोसे हजारो जैन मूर्तियोंकी प्रतिष्ठा और २१ धार भीसिद्धगिरि  
का संघ तथा अन्यभो शासनसेवा और धर्म का उद्योग किया  
आपभीने करीबन् १० लक्ष नये जैन बनाये थे. पट्टावलिमें लिखा  
है कि देविने मद्राखिदद क्षेत्रमें श्री सीमंधर स्थामिसे निर्णय  
किया था कि रत्नप्रभसूरिका नाम चौरासी चौबीसी मे रहेगा  
एक भवकर मोक्ष जायेगा इत्यादि ..जन कोम आचार्यधो के  
उपकारकी पूर्ण ऋणि है आपधोके नाम मात्रसे दुनियोंका  
भला होता है पर खेद इस बात का है कि कीतनेक कृतज्ञो  
पसे अज्ञ ओसवाल है कि कुमति के बदागृहमें पढ़वे पसे  
मदान् उपकारी गुरुवर्य के नामतक को भुठ बैठे हैं ।



# जेन जाति महोदय



म अयस्या जान, तरण तारण मिद्धक्षेत्रकी तलेटीमें असंख्य मुनि व श्रावक श्राविकादि सघकी उपस्थितिमें  
 . म अयस्या जान, तरण तारण मिद्धक्षेत्रकी तलेटीमें असंख्य मुनि व श्रावक श्राविकादि सघकी उपस्थितिमें





सूरि सलेखना करते हुवे पवित्रतीर्थ सिद्धाचल पर पधार गये वहां एक मासका अनसन कर समाधि पूर्वक नमस्कार महामंत्र का ध्यान करते हुवे नाशमान शरीर का त्यागकर आप वारहवे स्वर्गमें जाके विराजमान होगये जिन समय आचार्य श्री सिद्धाचलपर अनसन कीया था उसरोजसे अन्तिम तक करीबन ५००००० श्रावक श्राविका सिवाय विद्याधर और अनेक देखि देवता वहां उपस्थित थे आपश्रीका अग्निसंस्कार होने के बाद अस्थि और रक्षा भस्मी मनुष्योंने पवित्र समझ आपश्रीकी स्मृतिके लिये ले गयेथे आपके संस्कार के स्थानपर एक बड़ा भारी विशाल स्तुभभी श्री संघने कराया था जिसमे लाखों द्रव्य संघने खरच कीयाथा पर कालके प्रभाषसे इस समय वह स्तुभ नहीं है तो भी आपश्रीकी स्मृतिके विन्द आजभी वहां मौजूद है विमलवसीमे आपश्री के चरण पादुका अभी भी है इस रत्नप्रभसूरि रूप रत्न खोदनेसे उस समय संघका महान् दुःख हुआथा भविष्यका आधार आचार्य यक्षदेवसूरि पर रख पवित्र गिरिराजकी यात्रा कर सब लोग वहांसे विदाहो आचार्य श्री यक्षदेवसूरिके साथ में यात्रा करते हुवे अपने अपने नगर गये और आचार्य यक्षदेवसूरि अपने पूर्वजोके बनाये हुवे जैन जातिशा उप देशरूपी अमृतधारा से पोषण करते हुवे फीरभी नये जैन बनाते हुवे उसमे वृद्धि करने लगे ॐ शान्ति यह भगवान् पार्श्वनाथका छठा पाठ आचार्य रत्नप्रभसूरि अपनी चौरासी वर्षकी आयुष्य पूर्ण कर घोरान् चौरासी वर्षे निर्वाण हुवे यह महा प्रभाविक आचार्य हुवे इति ।



२७ ,, यक्षदेवसूरि	३२ ,, यक्षदेवसूरि.
२८ ,, कणसूरि:	३३ ,, कणसूरि:
२९ ,, देवगुप्तसूरि:	३४ ,, देवगुप्तसूरि:
३० ,, सिद्धसूरि:	३५ ,, सिद्धसूरि:*
३१ ,, रत्नप्रभसूरि:	३६ ,, कणसूरि:

\* इन आचार्यके बाद श्रीरत्नप्रभसूरि: और यक्षदेवसूरि इन दोनों नामोंको भण्डार कर शेष तीन नामसेही परम्परा चली है ।

३७ ,, देवगुप्तसूरि:	५१ ,, कणसूरि:
३८ ,, सिद्धसूरि:	५२ ,, देवगुप्तसूरि:
३९ ,, कणसूरि:	५३ ,, सिद्धसूरि:
४० ,, देवगुप्तसूरि:	५४ ,, कणसूरि:
४१ ,, सिद्धसूरि:	५५ ,, देवगुप्तसूरि:
४२ ,, कणसूरि	५६ ,, सिद्धसूरि:
४३ ,, देवगुप्तसूरि:	५७ ,, कणसूरि:
४४ ,, सिद्धसूरि:	५८ ,, देवगुप्तसूरि:
४५ ,, कणसूरि:	५९ ,, सिद्धसूरि:
४६ ,, देवगुप्तसूरि:	६० ,, कणसूरि:
४७ ,, सिद्धसूरि:	६१ ,, देवगुप्तसूरि:
४८ ,, कणसूरि:	६२ ,, सिद्धसूरि:
४९ ,, देवगुप्तसूरि:	६३ ,, कणसूरि:
५० ,, सिद्धसूरि:	६४ ,, देवगुप्तसूरि:

( ६४ )

जैन जाति महोदय प्र. तीसरा

६५ ,, सिद्धसूरि:	७५ ,, कक्कसूरि:
६६ ,, कक्कसूरि:	७६ ,, देवगुप्तसूरि:
६७ ,, देवगुप्तसूरि:	७७ ,, सिद्धसूरि:
६८ ,, सिद्धसूरि:	७८ ,, कक्कसूरि:
६९ ,, कक्कसूरि:	७९ ,, देवगुप्तसूरि:
७० ,, देवगुप्तसूरि:	८० ,, सिद्धसूरि:
७१ ,, सिद्धसूरि:	८१ ,, कक्कसूरि:
७२ ,, कक्कसूरि:	८२ ,, देवगुप्तसूरि:
७३ ,, देवगुप्तसूरि:	८३ ,, सिद्धसूरि:
७४ ,, सिद्धसूरि:	८४ ,, ... ..



